FOR BLIS STUDENTS

Course : - Bachelor of Library and Information Science (BLIS)

Paper : - Paper-IV

Prepared By: - Aftab Ahmad, Assistant Librarian, Faculty Library Science

School of Library and Information Sciences, Nalanda Open University

Topic: COMMON COMMUNICATION FORMAT

Scanned with CamScanner

13.5 कॉमन कम्युनिकेशन फार्मेट (सीसीएफ) (Common Communication Format (CCF) :

वैज्ञानिक सूचनाओं के विकास में कमी विशेष रूप से पत्रिकाओं के लेखों का सहभागिता को ध्यान में रखते हुए युनेस्कों ने 1974 में मशीन पठनीय ग्रंथपरक विवरण हेतु इन्टरनेशनल काउंसिल ऑफ साइटिफिक यूनीयन्स एब्सट्रैक्टिंग बोर्ड की सहायता से रेफरेंस मैनुअल का निर्माण किया था । इसका उद्देश्य द्वितीयक सेवा जैसे सारकरण तथा अनुक्रमणिकरण को सम्मिलित करना तथा पत्रिका लेखों एवं मोनोग्राफ के लेखों के बिनिमय से था । विविध प्रकार के ग्रंथपरक अभिलेख प्रारुपों के बीच असंगता ने एकरूप ग्रंथपरक सूचना प्रणाली के विकास की आवश्यकता को बल दिया । इस संबंध में युनेस्को के अन्तर्गत पीजीआई द्वारा सन् 1978 में एक अन्तर्राष्ट्रीय सिम्पोजियम का प्रवर्तन किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यमान विभिन्न ग्रंथपरक विनिमय प्रारुप तथा उसे मार्क एवं यूनीमार्क में सम्बद्ध करने की समस्याओं पर विचार करना था । इसमें वे विशेषज्ञ भी भाग लिया जिन्होंने ISO 2709 को विकसित किया था । चूँकि प्रारुप को अत्यधिक परिस्कृत सम्पर्क लक्षण की आवश्यकता थी ताकि जर्नल में लेखों के अभिलेख तथा पत्रिकाओं के प्रकाशनों को सम्बन्धित किया जा सके । अत: इस सिम्पोजियम में एक प्रस्ताव पारित हुआ और युनेस्कों ने कॉमन कम्युनिकेशन फार्मेट हेतु एक तदर्थ ग्रुप का गठन किया । इस तदर्थ ग्रुप ने सीसीएफ के लिए आई.एस.बी.डी. को अपनाने तथा प्रारुप की संरचना हेतु अन्तर्राष्ट्रीय मानक ISO-2709 के नवीनतम संस्करण को आधार स्वरूप प्रयोग करने का निर्णय लिया । यह भी निर्णय लिया गया कि सीसीएफ के लिए एक नया प्रारुप होना चाहिए । सीसीएफ स्थापित बड़े अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय प्रारुप के बीच सेतु के रूप में प्रयोग किये जाने हेतु विकसित होना चाहिए । तदर्थ ग्रुप ने जिस डाटा तत्वों की पहचान की, वे सामान्य प्रयुक्त डाटा तत्व है तथा सीसीएफ के सारभाग को बनाते हैं । अत: तदर्थ ग्रुप ने दो ग्रंथपरक अभिलेख के बीच तथा उसी ग्रंथपरक अभिलेख में निहित तत्वों के मध्य संबंधों को प्रकट करने की विधि स्थापित किया । इसके अतिरिक्त अभिलेख प्रारुप, सैगमैंट्स एवं फील्ड्स के मध्य में संबंधों को प्रकट करने की विधि को विकसित किया ।

Scanned with CamScanner

सीसीएफ का प्रथम संस्करण 1984 में तथा द्वितीय संस्करण 1988 में प्रकाशित हुआ । युनेस्को ने सीसीएफ उपयोक्ताओं के लिए इम्पलीमेन्टेशन नोट्स फार यूजर ऑफ सीसीएफ का प्रकाशन किया । सीसीएफ का तृतीय संस्करण दो खंडों में प्रकाशित हुआ जिसमें प्रथम खण्ड सीसीएफ(बी) बिब्लियोग्राफिक तथा द्वितीय खंड सीसीएफ(एफ) फैक्चुअल है ।

सीसीएफ का अभिलेख संरचना ISO-2709 का विशेष क्रियान्वयन है । प्रत्येक सीसीएफ अभिलेख के चार मुख्य भाग होते हैं जो निम्न हैं :

(i) अभिलेख लेबल
(ii) निर्देशिका
(iii) डेटा क्षेत्र
(iv) रिकार्ड सेपरेटर

रेकार्ड लेबल में 24 करेक्टर, निर्देशिका में 14 करेक्टर तथा पाँच भाग यथा टैग, फील्ड की लम्बाई, आरंभिक करेक्टर की स्थिति, सैगमैंट आइडेंटीफायर, अकरेन्स आइडेंटीफायर होते हैं । डेटा क्षेत्र में इन्डिकेटर, सबफील्ड आइडेंटीफायर, सबफील्ड तथा फील्ड सेपरेटर होते हैं ।

सीसीएफ अभिलेख में एक से अधिक वस्तुओं का विवरण रखा जा सकता है, परन्तु प्रत्येक वस्तु का विवरण एक सिंगल रेकार्ड सैगमेंट प्राप्त करता है । प्राथमिक वस्तु हेतु प्राइमरी सैगमेन्ट तथा अन्य के लिए सेकेण्डरी सैगमेन्ट होता है । सैगमेन्ट सम्पर्क का प्रयोग उर्ध्वाधर सम्बन्ध के लिए किया जाता है (जैसे एक मोनोग्राफ और उसका अध्याय) और क्षैतिज सम्बन्ध में (जैसे विभिन्न भाषाओं में किसी कार्य का रूपान्तरण) भी प्रयोग किया जाता है ।

सीसीएफ अभिलेख की संरचना निम्नलिखित दर्शाया गया है :

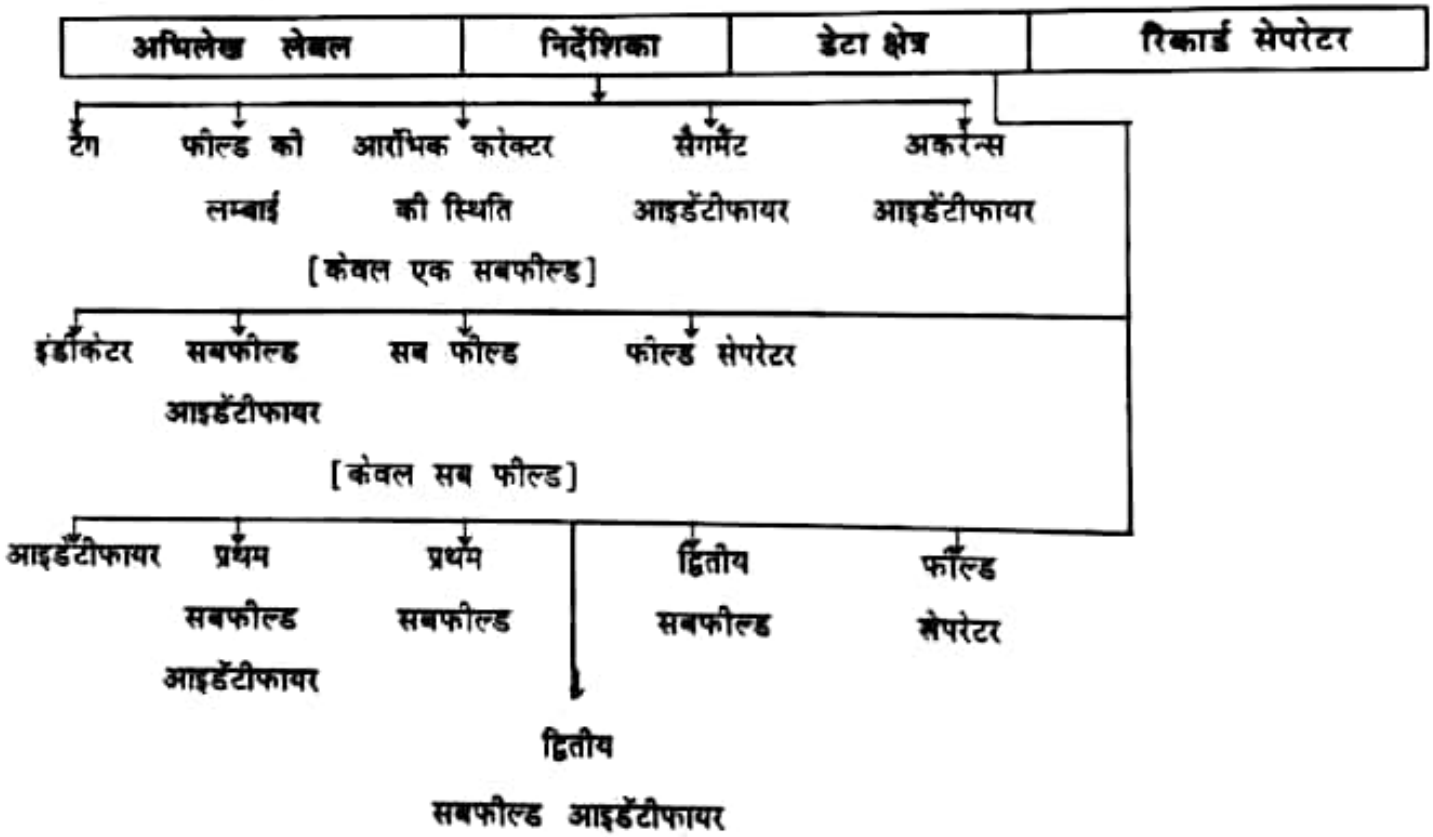

Scanned with CamScanner

अत: सीसीएफ दो या अधिक कम्प्यूटरीकृत प्रणालियों के मध्य विनिमय हेतु डेटा तत्वों के अभिलेखन के लिए एक विधि प्रदान करने में समर्थ है । सीसीएफ के उपयोग से एक सूचना प्रणाली अपने डेटा को सामान्य प्रारुप में परिवर्तित करता है तथा प्रत्येक प्रणाली सामान्य प्रारुप से अपने प्रारुप में परिवर्तित कर सकता है ।

Scanned with CamScanner